Roll No : ....

Total No. of Questions : **5**]   [Total No. of Printed Pages : **8**

A–101

B.A. (Part–III) DUE Ist Year Examination, 2021

GENERAL HINDI

(Compulsory)

Time : 1½ Hours]   [*Maximum Marks : 100*

इकाई–I

1. (अ) निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (शब्द सीमा **150** शब्द) :

(क) व्यक्ति की 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है। वह व्यापक है। अपने में सब और सबमें आप—इस प्रकार की एक समष्टि बुद्धि जब तक नहीं आती तब तक पूर्ण सुख का आनन्द भी नहीं मिलता। अपने आपको दलित द्राक्षा की भाँति निचोड़कर जब तक 'सर्व' के लिए निछावर नहीं कर दिया जाता तब तक 'स्वार्थ' खण्ड सत्य है, वह मोह को बढ़ावा देता है, तृष्णा को उत्पन्न करता है और मनुष्य को दयनीय कृपण बना देता है। कार्पण्य दोष से जिसका स्वभाव उपहत हो गया है, उसकी दृष्टि म्लान हो जाती है। वह स्पष्ट नहीं देख पाता। वह स्वार्थ भी नहीं समझ पाता, परमार्थ तो दूर की बात है।

अथवा

रेडियो टिप्पणीकार कहता है—'घोर करतल ध्वनि हो रही है।' मैं देख रहा हूँ, नहीं हो रही है। हम सब तो कोट में हाथ डाले बैठे हैं। बाहर निकालने का जी नहीं हो रहा है। हाथ अकड़ जाएँगे। लेकिन हम नहीं बजा रहे हैं, फिर भी तालियाँ बज रही हैं। मैदान

पर जमीन पर बैठे वे लोग बजा रहे हैं, जिनके पास हाथ गरमाने को कोट नहीं है। लगता है, गणतन्त्र ठिठुरते हुए हाथों की तालियों पर टिका है। गणतन्त्र को उन्हीं हाथों की ताली मिलती है, जिनके मालिक के पास हाथ छिपाने के लिए गर्म कपड़ा नहीं है। 6

(ख) मनुष्य के जीवन की शोभा या रौनक चरित्र है। आदमी के लिए यह एक ऐसी दौलत है जिसे अपने पास रखने वाला कैसी ही हालत में हो समाज के बीच गौरव और प्रतिष्ठा पाता ही है वरन् सबों के समूह में जैसा आदर नेक चलन वाले का होता है वैसा उनका नहीं जो धन और वैभव से सब भाँत रंजे-पुंजे और खुशहाल हैं। चरित्र पालन सभ्यता का प्रधान अंग है। कौम की सच्ची तरक्की तभी कहलावेगी जब हर एक आदमी उस जाति या कौम के चरित्र सम्पन्न और भलमनसाहत की कसौटी में कसे हुए अपने को प्रगट कर सकते हों। चरित्र शोभन मनुष्य मात्र के जीवन का एक मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

अथवा

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना ही सोना ढुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असम्भव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी से पानी के लावे में डूबता जा रहा था, वहाँ अब लहू बहता नजर आने लगा। कुछ और क्षण बीतने पर वह लहू भी धीरे-धीरे बैंगनी से काला पड़ गया। मैंने फिर एक बार मुड़कर दायीं तरफ पीछे देख लिया। हवा उसी तरह गूँज रही थी, पर पूरे दृश्यपट्ट पर स्याही फैल गई थी। दूर सैण्डहिल की तरफ देखा। वहाँ स्याही में डूबे धुँधले रंग हिलते नजर आ रहे थे। 6

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **250** शब्दों में दीजिए :

(क) 'कुटज' निबन्ध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'जामुन का पेड़' कहानी के कथानक को समझाइये। 7

(ख) स्वामी विवेकानन्द के जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है।

अथवा

अदम्य जीवन रिपोर्ताज का सार संक्षेप में बताइये। 7

इकाई–II

2\. (अ) निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (शब्द-सीमा **150** शब्द) :

(क) मन रे जागत रहिए भाई।

गाफिल होइ बसत मति खोवै, चोर घुसै घर जाई।

षट चक्र की कनक कोठड़ी, बसत भाव है सोई।

ताला कुंजी कुलफ के लागे, उघड़त बार न होई।

पंच पहरवा सोइ गए हैं, बसतैं जागण लागी।

जरा मरण थापै कछु नाहीं, गगन मण्डल लौ लागी।

करत विचार मनहीं मन ऊपजी, ना कहीं गया न आया।

कहै कबीर संसा सब छूटा, राम रतन धन पाया।

अथवा

आली! म्हाने लागै बिंदाबन नीको

घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसन गोविन्द जी को।

निर्मल नीर बहै जमुना को, भोजन दूध दही को।

रतन सिंघासन आप बिराजै, मुकुट धरै तुलसी को।

कुँजन कुँजन फिरत राधिका, सबद सुनत मुरली को।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको। 6

(ख) फैला यहीं से ज्ञान का आलोक सब संसार में।

जागी यहीं थी, जग रही जो ज्योति अब संसार में।

वे मोह बन्धन मुक्त थे, स्वच्छन्द थे स्वाधीन थे।

सम्पूर्ण सुख संयुक्त थे, वे शान्ति शिखरासीन थे।

मन से, वचन से, कर्म से, वे प्रभु भजन में लीन थे।

विख्यात ब्रह्मानन्द नद के, वे मनोहर मीन थे।

अथवा

हम पंछी उन्मुक्त गगन के, पिंजरबद्ध न गा पाएंगें।

कनक तीलियों से टकराकर, पुलकित पंख टूट जाएंगें।

हम बहता जल पीने वाले, मर जाएंगें भूखे प्यासे।

कहीं भली है कटुक निबौली, कनक कटोरी की मैदा से।

नीड़ न दो चाहे टहनी का, आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो।

लेकिन पंख दिए हैं तो, आकुल उड़ान में विघन न डालो। 6

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **250** शब्दों में दीजिए :

(क) 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की संवेदना को व्यक्त कीजिए।

अथवा

जयशंकर प्रसाद की 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता में निहित राष्ट्रीय भावना को समझाइये। 7

(ख) नागार्जुन की कविता 'प्रेत का बयान' में निहित व्यंग्य को अपने शब्दों में समझाइये।

अथवा

निर्मला पुत्तल की कविता 'आओ मिलकर बचाएँ' का मूल भाव क्या है ? 7

इकाई–III

3. (अ) निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखते हुए शीर्षक भी बताइये :

गुरु जितना पाठशाला में भय और ताड़ना दिखलाकर वर्षों में सिखला सकता है उतना अपने घर में बालक, माँ के अकृत्रिम सहज स्नेह से एक दिन में सीख लेता है। माँ के स्वाभाविक सच्चे और अकृत्रिम प्रेम का प्रमाण इससे बढ़कर और क्या मिल सकता है कि बच्चा कितना ही रोता-बिलखता हो माँ की गोद में जाते ही चुप हो जाता है। वात्सल्य रस की शुद्ध मूर्ति माता के सहज स्नेह की तुलना इस जगत में जहाँ केवल अपना स्वार्थ ही प्रधान है, कहीं ढूँढ़ने से भी नहीं मिलेगी। माता के स्नेह में पिता के समान प्रत्युपकार की वासना रंचमात्र भी नहीं होती।

3+2=5

(ब) निम्नलिखित में से दो मुहावरों या लोकोक्तियों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(i) आधा तीतर आधा बटेर

(ii) लोहे के चने चबाना

(iii) जिसकी लाठी उसकी भैंस

(iv) पाँचों उँगलियां घी में होना

(v) ईद का चाँद

(vi) आँख के अन्धे, गाँठ के पूरे

(vii) नौ दिन चले अढ़ाई कोस

(viii) खोदा पहाड़ निकली चुहिया 2+2=4

(स) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** शब्दों को शुद्ध रूप में लिखिए :

(i) रचियता

(ii) कवियीत्री

(iii) उज्वल

(iv) व्यवहारिक

(v) गुरू

(vi) अनूग्रहीत 2

(द) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(i) मोहन शाम के समय घूमने जाता है।

(ii) राम शायद कल अवश्य आएगा।

(iii) शेर की चिंघाड़ सुनकर सब सहम गए।

(iv) उसके बाद फिर क्या हुआ ?

(v) विन्ध्याचल पर्वत कहाँ स्थित है ?

(vi) बहुत से लोग बेहाल दशा में थे। 2

(य) निम्नलिखित में से किसी **एक** का पल्लवन कीजिए :

(i) कोटि जतन कोऊ करै, परै न प्रकृतिहिं बीच

(ii) अधजल गगरी छलकत जाय

(iii) मन के हारे हार है मन के जीते जीत

(iv) जाको राखे सांइया मार सकै न कोय 5

(र) निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** शब्द—युग्मों के अर्थ बताइये :

(i) कुल — कूल

(ii) अनल — अनिल

(iii) सुत — सूत

(iv) द्वीप — द्विप

(v) अवधि — अवधी

(vi) दशा — दिशा

(vii) शर — सर

(viii) प्रसाद — प्रासाद 4

इकाई–IV

4. (अ) अनुवाद की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

अनुवाद के महत्त्व को समझाइये। 3

(ब) निम्नलिखित अंग्रेजी अवतरण का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

It was the hot Summer days. A crow was suffering from thirst and was wandering here and there in the search of water. There he saw that the pitcher was placed under a nearer tree. In the hope that there was water in the pitcher. He flew to the pitcher and looked inside it. The crows saw that there is water in the pitcher, but it is so low that its beak could not reach there. He become depressed.

अथवा

निम्नलिखित राजस्थानी पद्य का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

आठ क्रोड़ बण्या थे गूंगा, कियां हुसी निसतारो ?

मायड़ भासा राजस्थानी कळपै, बीखो भोगै,

हाळण बणगी निज रै घर में, दूजा थाळ अरौगे,

नहीं बावड़ै बखत गयोड़ो, चेतो भविस विचारो!

बिना मानता मीरां री माँ, किण नै दरद बतावै ?

निजरी जाँघ उघाड्यां निज नै, लाज घणेरी आवै।

जूझो हकरै खातर, थे मत मिनख जमारो हारो।

उठो, ओळखो आपो थांरो, घणभोसा मोट्यारों! 8

इकाई–V

5. (अ) किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए (शब्द-सीमा **350** शब्द) :

(i) कोरोना महामारी

(ii) पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

(iii) स्वच्छ भारत अभियान

(iv) राष्ट्रभाषा की आवश्यकता

(v) योग-प्राणायाम का महत्त्व 10

(ख) भाई की शादी में सम्मिलित होने हेतु अपने मित्र को पत्र लिखिए।

अथवा

महाविद्यालय के प्राचार्य को शुल्क मुक्ति हेतु प्रार्थना पत्र लिखिए। 5